10

आत्मिक विकास की आवश्यकता

(5:11-6:9क)

5:1-10 में इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने यीशु को ''मलिकिसिदक की रीति पर सदा के लिए'' (आयतें 6, 10) महायाजक बताया। वहां पर वह रुक गया। एक अर्थ में उसने कहा ''मुझे एक परेशानी है। मुझे परेशान इसलिए है क्योंकि *आपको* परेशानी है मुझे पक्का पता नहीं है कि आप मेरी बात को समझ सकते हैं या नहीं'' (देखें आयत 11)। इस प्रकार से लेखक ने इब्रानियों की पुस्तक के सबसे व्यवहारिक भागों में से एक अर्थात *आत्मिक विकास* की आवश्यकता वाले भाग का परिचय दिया। इन आयतों को पढ़कर हम फिर से इस तथ्य से प्रभावित होते हैं कि समय इतना अधिक नहीं बदलता। आज भी आत्मिक विकास की बड़ी आवश्यकता है।

यह कैसी *थी* : वे बढ़ने में नाकाम रहे थे (5:11-14)

जिन्हें सम्बोधित किया गया था वे आत्मिक नवजात थे (आयत 13) जिन्हें अभी भी बच्चों वाली खुराक चाहिए (आयत 12)। हमारा वचन पाठ विकास करने में नाकाम रहने वालों की पहचान के केई तरीके बताता है।

उन्हें अध्ययन करना नहीं आता (5:11)।

वे ''ऊंचा सुनने लगे'' थे (आयत 11)। ''ऊंचा'' शब्द उसी यूनानी शब्द से लिया गया है जिसका अनुवाद 6:12 में ''आलसी'' हुआ है। वे आलसी सीखने वाले थे यानी वे सीखने के लिए आवश्यक प्रयास नहीं करना चाहते थे। ध्यान से सुनने के लिए प्रयास लगाना पड़ता है। आम तौर पर जब लोग नीरस बाइबल क्लासों या नीरस आराधना सभाओं की शिकायत करते हैं तो दिक्कत यह होती है कि वे सिखाई गई बातों को उतनी अच्छी तरह से नहीं सुन रहे होते। यदि उनके लिए सब आत्मिक बातें नीरस हैं तो सम्भवतया समस्या क्लास की या आराधना सभा की नहीं बल्कि उनकी अपनी है।

उन्हें सिखाना नहीं आता (5:12क)।

पत्री में जिन लोगों से बात की गई उनमें सिखाने की क्षमता नहीं थी। क्योंकि उन्हें स्पष्ट रूप में सिखाने में दिलचस्पी न हीं थी। हम में से हर किसी को सिखाने वाले होना आवश्यक है (मत्ती 28:19, 20)। हम में से सब लोग सार्वजनिक रूप में सिखाने वाले नहीं हैं, क्योंकि ऐसा करने की योग्यता एक तोड़ा है (रोमियों 12:7) परन्तु हम में से हर किसी को यहां तक बढ़ना चाहिए कि हम दूसरों को अपने विश्वास के बारे में बता सकें।

वे और सीखना नहीं चाहते (5:12ख, 13)।

इन आत्मिक नवजात शिशुओं को बाइबल के अधिक कठिन विषयों को सुलझाने में कम दिलचस्पी या कोई दिलचस्पी नहीं है। उन्होंने सीखना बन्द कर दिया था और पवित्र शास्त्र के अपने ज्ञान में परिपक्व होने का प्रयास नहीं करना चाहते थे।

वे सही और गलत में अन्तर नहीं कर सकते (5:14)।

संदर्भ में यहां लेखक को अच्छी शिक्षा और बुरी शिक्षा में अन्तर करने की चिन्ता थी। जिस प्रकार से बच्चे अपने मुंह में कोई भी चीज़ डाल सकते हैं, वैसे ही आम तौर पर आत्मिक रूप में कच्चे लोग अपने मनों में हर प्रकार की गलत शिक्षाओं को डालने के लिए झूठे शिक्षकों को आने देते हैं।

यह कैसा होना *चाहिए* : उन्हें परिपक्वता में बढ़ना चाहिए (6:1-3)

चुनौती (6:1, 2)

लेखक ने अपने पाठकों को ''मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को'' छोड़ने की चुनौती दी (आयत 1)। ASV में ''प्राथमिक सिद्धांत'' वाक्यांश का इस्तेमाल किया गया है। हम इसे सुसमाचार की ABC's कह सकते हैं। आम तौर पर ''प्राथमिक सिद्धांत'' यीशु के बलिदान की कहानी और विश्वास तथा आज्ञा पालन के द्वारा उसे मानने को कहते हैं (मरकुस 16:15, 16; मत्ती 28:18-20)। इब्रानियों 6:1, 2 की सूची में वे विषय हैं जिन्हें हम ''कठिन'' मान सकते हैं, परन्तु लेखक ने उन्हें ''आरम्भ'' कहा। उसके कहने का अर्थ यह नहीं था कि हमें आरम्भिक शिक्षाओं पर विचार नहीं करने की आवश्यकता नहीं है। कई बार हमें आरम्भिक विषयों पर अपनी याद को ताज़ा कर लेना चाहिए, पर हमें वहीं पर रुक नहीं जाना चाहिए। वे आधार हैं यानी उन पर हमें बाइबल के ज्ञान की दिवारें बनानी चाहिए।

लेखक अपने पाठकों से *परिपक्व* होने अर्थात बढ़ने का आग्रह कर रहा था। हमें अपनी सोच और अपने कामों में परिपक्व होना आवश्यक है (देखें 1 कुरिन्थियों 13:11)। आज प्रभु की कलीसिया के सामने हर जगह यही चुनौती है!

समर्पण (6:3)

अपने पाठकों से बढ़ने का आग्रह करने के बाद लेखक ने उनके साथ अपने आपको भी मिला लिया। उसने कहा, ''और यदि परमेश्वर चाहे, तो हम यही करेंगे'' (आयत 3)। कांश हम में से हर किसी का यही जवाब हो!

यह कैसे *हो सकता* था (यदि वे न बढ़ते) (6:4-9क)

क्या हो सकता था

6:4-8 में लेखक अपने पाठकों को किनारे पर अर्थात पूर्ण विश्वासत्याग तक ले गया। पहले

उसने कहा था कि मसीही लोग दहन (2:1) और धूल हो (3:12; देखें KJV) सकते हैं। 5:11 में उसने चेतावनी दी कि वे ऊंचा सुन सकते हैं।[1] उन्होंने विनाश की ओर बढ़ रहे होना था। हम में से कोई भी आत्मिक रूप में सीधे खड़े नहीं रहता या तो हम आगे को बढ़ते हैं या पीछे की ओर जाते हैं। यदि हम बढ़ नहीं रहे तो हम विश्वासत्याग करने के खतरे में हैं!

यह किसके साथ हो सकता है

कुछ लोग दावा करते हैं कि 4 से 6 आयतें मसीही लोगों के लिए नहीं हैं, क्योंकि (उनका दावा है) कि परमेश्वर की सन्तान गिर नहीं सकती। परन्तु ध्यान दें कि जिनकी बात की गई वे मसीही लोग थे। वास्तव में वे शानदार मसीही रहे थे। किसी समय उन्हें ...

- किस समय उन्हें ''जयोति दी गई थी'' (आयत 4; देखें 10:32)।
- उन्होंने ''स्वर्गीय दान का स्वाद चखा'' था (आयत 4; देखें 2:9)।
- वे ''पवित्र आत्मा के भागी'' हुए थे (आयत 4; देखें प्रेरितों 2:38)।
- उन्होंने ''परमेश्वर के उत्तम वचन का स्वाद चखा'' था (आयत 5; देखें 2:9)।
- उन्होंने ''आने वाली युग की सामर्थ का स्वाद चखा'' था (आयत 5)।[2]

उन मसीही लोगों के लिए जिन्हें यह पत्र मिला था ये बातें सच होने के बावजूद वे विश्वास से फिर सकते थे। लेखक ने आगे कहा, ''... तुम्हारे विषय में हम इससे अच्छा और उद्धार वाली बातों का भरोसा करते हैं'' (आयत 9)। अन्य शब्दों में, ''मुझे नहीं लगता कि यह त्रासदी तुम्हें गिरा देगी, परन्तु इस बात को समझ लो कि ऐसा *हो सकता* है'' (देखें 1 कुरिन्थियों 10:12)। परमेश्वर यह तय करने के लिए हम सब की सहायता करे कि उसकी सहायता से हम आत्मिक रूप में बढ़ेंगे (6:3)!

सिखाने वाले के लिए नोट्स

हमारे वचन पाठ के लिए एक और ढंग ''न बढ़ने के खतरे'' हो सकता है। नीचे इस ढंग के कुछ नोट्स दिए गए हैं।

(1) *निराश होने का खतरा* (5:12-14)। मध्यम पुरुष (तुम) में लिखा गया यह भाग अत्यधिक व्यक्तिगत भाग है जो पाठकों की समस्या के केन्द्र में चोट करता है: उन्होंने परमेश्वर के वचन की उपेक्षा की थी और इस कारण वे आत्मिक रूप में बढ़ नहीं पाए।

(2) *बच्चे बने रहने का खतरा* (5:12-14)। कलीसिया में बचपना एक बड़ी समस्या थी। ''हमें सब बातों में उसमें जो सिर है अर्थात मसीह में बढ़ना आवश्यक है'' (इफिसियों 4:15; देखें 2 पतरस 3:18)।

(3) *अज्ञानी बने रहने का खतरा* (5:12-6:3)। पाठक परमेश्वर के वचन से अज्ञात थे (5:12-14)। वे बिल्कुल आरम्भ की बातों से भी अज्ञात थे (5:12; 6:1-3)।

(4) *फल रहित होने का खतरा* (6:4-8)। भूमि के एक खेत में बारिश होने से फल लग सकता है (आयत 7)। एक-दूसरे खेत को वही आशीष मिलने के बावजूद वह कांटे और झाड़ियां उगा सकता है (आयत 8)। यही बात परमेश्वर की आशिषों पर लागू होती है। उन

आशिषों को पाने के बाद हमारे लिए फल रहित होना सम्भव है।

(5) *खोने का खतरा* (6:4-8)। परमेश्वर की आशिषों को पाकर कांटें और झाड़ियां उगाने वाली भूमि बेकार, श्रापित होने को थी और उससे चला दिया जाना था (आयत 8)। हमारे लिए आत्मिक रूप में न बढ़ने पर यह डराने वाली आकृति हो सकती है!

टिप्पणियां

[1]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्पोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 299 से लिया गया। [2]यह स्वर्ग की बात हो सकती है, परन्तु सम्भवतया यह मसीह युग की बात थी। ''आने वाला युग'' मसीही युग की बात करने के लिए यहूदियों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला वाक्यांश है।